

५२

२३९

वेदान्त

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४ वे ७५ [३३१]

ग्रंथ नाम गीता.

विषय म. वेदांत.

कृत

म. वेदांत

गीता- मराठी

शांतदेवकृत



मा हुली

॥ वणीं लिपेर मेधरा ॥ धरुषथाणी लेखाकारा ॥ ^{होच}
 ॥ उषकार अंगा पै केलें ॥ ४॥ होनी धज्ञान घेंध ॥ ^{नवन}
 ॥ मुटी ॥ परब्रंम ने णाती बापु डीं ॥ साचीया स्वरां ॥
 ॥ परवाची गोठी प्रहुट को साव्यां सतवीचा प्रसा ॥
 ॥ दु ॥ तेणे कधीं लाघम बोधु ॥ वो संसृते ये बवा ॥
 ॥ दु ॥ न कळे धर्षयल जा नीया सी ॥ द्वा ह्मणे ॥
 ॥ केले प्राह्व ॥ पूर्वी व्यास केले संस्कृत ॥ लो ॥
 ॥ नी उपकार बहुत ॥ जाले जन ॥ ७॥ सा उपका ॥
 ॥ रास बन मस्कृत ॥ नमीला ज्ञाने धर गुर ॥

(2)

- ॥ धातानमु श्रीगुरा जे षे धज्ञान फे डी ये ले ॥ ५ ॥
॥ धातानमुं भकी भाग्यवता ॥ जे धनु सर ले ह ॥
॥ सगनाथा ॥ मगन मुं मता गीना ॥ धापी वी धु कु ॥
॥ वगथ ॥ ये धुन कथा सागेन पवीत्र ॥ जे मोक्ष ॥
॥ दायक गीना ॥ अती दीनी पटना पवी ॥
॥ ॥ ॥ होली जनु भु ॥ ५० ॥ यामा स्वाची थोरी ॥
॥ ने धाती देव धवं धारी ॥ उपमां द्याव या गधर त्री ॥
॥ थोडी धसे ॥ ११ ॥ रोग व्याधी शी वौ ध धा ॥ १० ॥
॥ डी देहान्यो पीडा कंद ॥ तो डी जीना ये भव बंध ॥

॥ तोडी भगवत गीता ॥ १२ ॥ तेसांगेन थलपथो ॥
 ॥ डोंगिये कनाय भट्ट तेवां कुडी ॥ ते गीतेची प्रचं ॥
 ॥ लीलागे ज्ञानदेवो ॥ १३ ॥ कवरावां पाडवांस ॥
 ॥ ग्राम जाला ॥ सकळ कैवळार जीतीला ॥
 ॥ दुयोघिन रणाशी धाला ॥ सकळ बंधुरा कुक्का ॥
 ॥ मर्कट कळीघोण पडिला ॥ मीसु हीरणाशी धा ॥
 ॥ लोण पडव वीज इजाला ॥ भटले घृत राख ॥ १४ ॥
 ॥ धुवरा वसणे सें जयाशी ॥ काय जाले कैर ॥
 ॥ गंधांशी ॥ सच्यी स्त्रीती कैरी ॥ जेम जयाशी सां ॥

(२५)

गोजो ५६।

(3)

॥ संजयो ह्यणे दूतरावण ॥ परियै न्नी रायाप ॥
॥ बीजा ॥ पुर्वी चिया भवद्देना ॥ शरण जावे ॥ १७ ॥
॥ ह्यस्थाले न्नी चार्दी ॥ कौरवें ने द्दी न्नी का ही ॥ १८ ॥
॥ संग्राम धी लव ला ही ॥ चार्दी न्नी के ले ॥ १९ ॥
॥ मगरण मुमि सि घाले ॥ दोघा चे दळ सनी ॥
॥ घजाले ॥ कै से छ पुर्व वर्तले ॥ ने परी ये न्नी ॥
॥ दूतरावण ॥ बथा संजयो ह्यणे ॥ रायां परी ये ॥
॥ न्नी गंध करावोणी दळ कै वसी ॥ साव द्दीणी ॥
॥ पंसी ये न्नी वीर पांडवा चे ॥ २० ॥ सादो ही ॥

॥ दक्कासमदृष्टीजाली ॥ दोघाचीसैन्येभी ॥
 ॥ कालीगंतेशेवाक्येगजीनिली ॥ कैरववीरा ॥
 ॥ चीग २१ ॥ रणपुरेगजीनलीघोर ॥ साणेद ॥
 ॥ पाणीलेमेरुशीरवर ॥ मृदंगकाहाकारण ॥
 ॥ पुरेसख्यनाही ॥ २४ ॥ नीशाणभेरीचागजर ॥
 ॥ टोलदमाभेवाजतीपारा ॥ हाकादेतीकैरव ॥
 ॥ वीराहणतीसंहारपांडवाशी ॥ २५ ॥ येसंग ॥
 ॥ जीनेलकीनपातलो ॥ येकापुढेयेकधांवीन ॥

(५)

॥ ले॥ येकाहुनीयेकधागले॥ बोलतीथिहंतां॥
॥ २४॥ भोवतेकुड्यंरभार॥ मध्येद्रोणकर्ण॥
॥ वीरभीस्म॥ कौरवांचाबडीवारथोरसठा॥
॥ तीर्थांडवेबापुडी॥ २५॥ साचासग्यामदार॥
॥ ठा॥ पडीलाद्रोणकर्ण॥ पुढेंभीस्मदारुण॥
॥ रणीउभाटाकला॥ २६॥ तेदेवोनीपाडंब॥
॥ वीरंगाटाकुनीछाळेसमोरी॥ सात्रिलणे॥
॥ शारगाधरा॥ लुप्तीउंणीकिं॥ यकरालसनी॥

॥२९॥ मगरणभुमीसधाले॥पांडवीकैरेवा॥
॥भारदेखीलेंजोडी॥पाडवसैन्याजालीवो॥
॥टीगवाजनीध्याकासकडाडी॥घडीघडी॥
॥देतीहाका॥२९॥मगम्रीहमस्त्रोंपांघज॥
॥न्युंसंकस्फुरति॥॥घमिचावीजयगजीनी॥
॥लागाभीमाचा॥पैडरववाजनिता॥थजु॥
॥नेस्फुरलादेवदत्त॥३०॥लकुळसाहादेवबकी॥
॥घाणीकरायसकळी॥काशीधरदृपद॥

(5)

- ॥ रथबकी ॥ येही शरवसुहरीलो ॥ ३१ ॥ तोनादुडु ॥
॥ भटुमीला ॥ मेरुमादारकोपीनला ॥ ससस ॥
॥ मुद्रहेलावीला ॥ इचकलापाताकीशेषा ॥ ३२ ॥
॥ ईकादीकाजालीघपरापरी ॥ तेपाहोटेले ॥
॥ घबंरी ॥ नादेकायेधरत्री ॥ नकुटशरिवरी ॥
॥ गजबजजाला ॥ ३३ ॥ गीरीपुरीभारथीसंन्या ॥
॥ त्रीगातेहीसाडीलेछा ॥ भमात्री ॥ आपदेपडी ॥
॥ लीनादेत्री ॥ थाडबावीपोरवरणी ॥ ३४ ॥ तेणी ॥
॥ नादेकौरवाचेहृदय ॥ घाणसिक्कवीरानेकुं ॥

॥ टोफाहो ॥ धर्जुन समई तीये ॥ काय बोलता ॥
॥ जालो ॥ ३५ ॥ धहोजी जनार्दना ॥ म्या वोकरवा ॥
॥ वेंकवणा ॥ साया होनी रथ सेना ॥ भग करीना ॥
॥ संग्राम ॥ ३६ ॥ मगदक मार पाहो लागले ॥ दे ॥
॥ वेधर्जुना वसि ॥ तिले ॥ मगधर्जुन बोली ॥
॥ लोतां धनुष्य पाते टेनी ॥ ३७ ॥ इती श्री भगवता ॥
॥ गीता ॥ व्यास देवनी रोपति ॥ प्राहृत जाण ॥
॥ धातां प्रणे ज्ञान देव ॥ प्रथमो ध्याय ॥ ३८ ॥ ६९ ॥

(६)
॥ पार्थहृषो वैषनी दीर्घा ॥ थोर पाप गाज नार्दी ॥
॥ नागराजन लगे मज जाणा ॥ कवठो परी ॥ १ ॥ बं ॥
॥ धुन्तुलने गुरा ॥ मामे मेलु पोया चानकुरी संवत्ता ॥
॥ गुरु बंधु कळविसि ॥ हे कैसे मारवि ॥ समरत्ता ॥
॥ त्रीमारणे ॥ धाण ॥ धाही राज करणे ॥ तुसी ॥
॥ या प्रसादे काय ठणे ॥ या ताची धेणे धन कि ॥
॥ राड्य ॥ ॥ हा देहे पडे घर त्री ॥ परी गोत्र जाचा वधु ॥
॥ न करी ॥ थोर पाप गा श्री हरी ॥ कैसे या पुरी मा ॥
॥ रवी त्री ॥ ॥ नुसे हसवण जाली या ॥ सर्व पाप ना ॥
॥ सेस्वामीय ॥ ॥ येसे छसो नीयां ॥ केवी गोत्र वध ॥

॥ करवीत्री ॥ ८ ॥ घातांतेराजस्ववसककी ॥ १ ॥
 ॥ घाणीघामुचेतुंभुजबंकी ॥ जेराज्यपाहीजेयेका ॥
 ॥ कीजतेतुंघासादेत्री ॥ ६ ॥ मजराज्यकरणेना ॥
 ॥ हीसर्वथा ॥ हणोनीचरणीदेवीलभाभाय ॥ १ ॥
 ॥ पुरेथनताराज्यथणीसंपदं ॥ ७ ॥ हणुनीध ॥
 ॥ नुष्यभाते ॥ तेहीसमपीलुते ॥ कंटाकुनीस ॥
 ॥ वंगिते ॥ रोमार्चिलुटीले ॥ ८ ॥ पुणतीकेलना ॥
 ॥ मस्कार ॥ घाताराज्यसर्वथानकं ॥ गोत्रजा ॥
 ॥ तेनमाने ॥ तेचीमस्तुघासावते ॥ ९ ॥ मगस्तु ॥
 ॥ ठेजनादनु ॥ पाशतुंनपुसकथशानु ॥ काय ॥

(७)
॥ साडीतोडी धर्मीमानु ॥ अयेकपात्रहोशी ॥ १७० ॥
॥ मरमरथपेषथाणीलें ॥ जीताची मरणाजीनीलें ॥
॥ कवणज्ञानगुजसुचले ॥ नाहीकळलेमजा ॥ १७१ ॥
॥ मरणापरिसिवोटो ॥ जेज्ञानगुजसुचलेरवोटो ॥
॥ जेजेमोक्षप्रघटेनेनेणडीपाथी ॥ १७२ ॥ मारीतु ॥
॥ कवणा ॥ मारवीतामीचयेकजाणा ॥ धासस्य ॥
॥ सपनीविणा ॥ साडीमरणाकैवे ॥ १७३ ॥ धासाये ॥
॥ कवतु ॥ मपिरमासाथव्यतु ॥ तोट्टेहामाजी ॥
॥ रवेकतु ॥ भाजीयेमायेस्ववो ॥ १७४ ॥ मजमजु ॥
॥ तांगासाडीलुथंहना ॥ मारीनाथाणीमार ॥

॥ वीतानोमचजा॥ ॥ ॥ वधातुनीमीत्याकारण॥
 ॥ घेईगांधनुषबाण॥ ॥ यावरबालुलिनाथजनि॥
 ॥ करसपुष्पजोडुनी॥ १६॥ ॥ सणेज्ञानेधरु॥ ॥ ती॥
 ॥ सरेयाद्याद्याचीचिन्ता॥ ॥ सागेनपवीनुओते॥
 ॥ यात्री॥ १७॥ ॥ इतीश्रीभगवतगीताव्यासदेव॥
 ॥ नीरोपीता॥ ॥ प्रादुक्तजाणयातां॥ ॥ सणेज्ञानदेव॥
 ॥ १८॥ ॥ द्वितीयोऽध्यायः॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥
 ॥ भगसणेहस्सगनाथा॥ ॥ पाथलुपंचभुत॥ ॥ हादे॥
 ॥ हीं वसेतद्यामाभासा॥ १९॥ ॥ भीपरभासादुसरा॥

(४)

॥ करनीटे वीले दश वेदारे ॥ नाभी स्थानी थार ॥
॥ सायं च भुता शिगा ॥ ५ ॥ पयै कोनी लुणो य जुनि ॥
॥ हेतु ह्री सांगति ले पंच प्राण ॥ सार्चनीं वेद व ॥
॥ णक व ॥ वीस्त सनी सगे देव ॥ ३ ॥ अण पान ॥
॥ व्यान उदान ॥ पंच वानो समान ॥ हे पंच भुत था ॥
॥ ह्मा जाण ॥ मज पालुनी उद्वले ॥ ४ ॥ ते नाभी ॥
॥ स्तानी रवेळत ॥ मास माये च पंच भुत ॥ अष्ट पा ॥
॥ कोळी यतेथे ॥ पाकोळी केची त्रिविपये ॥ ५ ॥
॥ ये से चो वीस पत्रे रवेळ ॥ तो प्राण ॥ असे बोटा रु ॥
॥ तो नकळ थकाळ द्यावे मना सगे ॥ ६ ॥ त्या मना ॥

॥ चेनीषाघारे ॥ रवेळतीत निनीकरे ॥ मनाहु ॥
॥ तसिरेधावोनेणे ॥ धर्जुनहणे देवाभानाचा ॥
॥ वीरनाससागावा ॥ येकपाथी चितदेउनी ॥ ८ ॥
॥ मनतेमजपासुनी ॥ परीयेमायेसियेथाधीन ॥
॥ मनधाकळीयेसकोण ॥ योगनिही ॥ ९ ॥
॥ इंतीश्रीमगवतगीता ॥ व्यासदेवनीरोपीत ॥
॥ प्राह्मतजाणयाता ॥ हणेज्ञानेदेवो ॥ व्याघ ॥

(१)

॥ यतीसरा ॥ ३ ॥ धृ धृ धृ धृ धृ धृ धृ धृ धृ ॥



॥ पार्थिवणे केरी राजा ॥ देही नुना दत्री ॥ वोजा ॥ १ ॥

॥ कीर्ति वषध से बुद्धा ॥ हे मजसा गो देवा ॥ १ ॥ धृ

॥ मीं धृ नृणा प ॥ धृ र मां इ रे क्षण ॥ तेण ॥

॥ तेण पुन से व घटी ॥ था परिये शी पा था सगु ॥

(५५)

॥ ७॥ तुझा ज्यन्माना ही गणन ॥ येतां जातां लु ॥
॥ झेना ॥ धर्जुनाने मीलुना ही ग ॥ तु लुणशी ॥
॥ माझे गोत्रज ॥ तरी तुमुललाशी सहज ॥ धनं ॥
॥ त ज्यन्मनुजने मीसगेन ॥ तुं ही डलाशी ना ॥
॥ नावें शी ॥ परी धनं त ज्यन्मीने शी ॥ चारखा ॥
॥ ७॥ नेणशी मोगी शी ॥ परी ने मीलेना ही ॥ थसा ॥
॥ झुळी की माळ ते लीला बळी ॥ शुध ब्राह्मण ॥
॥ धतलं कुळी ॥ वैच झुळी यमुत की गावु जात्र ॥
॥ शीया धी ॥ यै शी या कैलपायेर झारा ॥ सा ॥
॥ नाटवशी गा धनुर्धर ॥ येथे उमजला शी ये ॥

(10)

- ॥ कसरा ॥ जेमिनिभारी गोचरा ॥ ७ ॥ घगाहे मृगा ॥
॥ ज्येष्ठवधे ॥ धमरते दोधे ॥ धाणीसगीये तीधे ॥
॥ येकनाशीवितः ॥ ८ ॥ धनंतशरीरसाडुनी ॥ ९ ॥
॥ हीडुलात्रानिनायोनी ॥ वोत्तरवक्त्रधरिरे ॥ १० ॥
॥ शुनी ॥ ज्येष्ठवडलीकुसेमासे ॥ ११ ॥ मगवी ॥
॥ नवीलेपाथी ॥ तु देव्यासीमाणसे ॥ १२ ॥ ज्येष्ठ ॥
॥ वानतित्राकैसे ॥ हेमजं प्रतीसागीजे ॥ १३ ॥ दे ॥
॥ वस्त्रोघनं ज्यया ॥ मजकारणेयावया ॥ साधु ॥
॥ सतउधारावया ॥ नासावया दुष्टराष्टस ॥ १४ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com